# मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला

*( जैन साहित्य )*

**आदिपुराण** आचार्य जिनसेन

सम्पादक एवं अनुवाद : डॉ. पन्नालाल जैन

'आदिपुराण' प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव तथा भरत-बाहुबली के पुण्य चरित के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के मूल स्रोतों एवं विकासक्रम को आलोकित करने वाला अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

**मूल्य : भाग-1-600, भाग-2-500 रुपये**

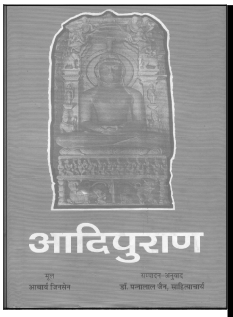


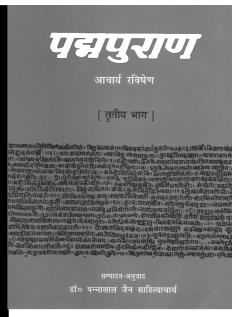


**पद्मपुराण** आचार्य रविषेण

सम्पादक एवं अनुवाद : डॉ. पन्नालाल जैन

आचार्य रविषेण (सातवीं शती) का प्रस्तुत ग्रन्थ पद्मपुराण संस्कृत के सर्वोत्कृष्ट चरितप्रधान महाकाव्यों में परिगणित हैं। पुराण होकर भी काव्यकला, मनोविश्लेषण, चरित्रचित्रण आदि में यह काव्य अद्भुत है।

**मूल्य : भाग-1-500, भाग-2-400, भाग-3-400 रुपये**

**महापुराण** कवि पुष्पदन्त

सम्पादक एवं अनुवाद डॉ. पी. एल. वैद्य एवं डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन (पाँच खंडों में)

अपभ्रंश भाषा में निबद्ध महापुराण या त्रिषष्ठि महा-पुरुषगुणालंकार महाकवि पुष्पदन्त के तीन ज्ञात काव्य-ग्रन्थों में सबसे प्राचीन और विशाल है।

**मूल्य : एक-400, दो-250, तीन-350, चार-180, पाँच-360, रुपये**

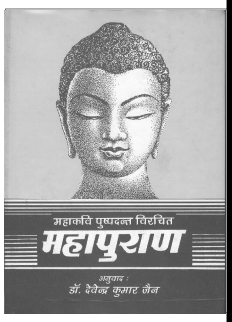


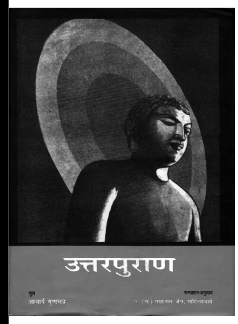


**उत्तरपुराण** आचार्य गुणभद्र

सम्पादक एवं अनुवाद : डॉ. पन्नालाल जैन

महापुराण का उत्तर भाग आचार्य गुणभद्र द्वारा रचित यह उत्तरपुराण है।इसमें तीर्थंकर आदिनाथ और चक्रवर्ती भरत को छोड़कर शेष 23 तीर्थंकरों, 11 चक्रवर्तियों, 9 बालभद्रों, 9 नारायणों, 9 प्रतिनारायणों तथा तत्कालीन विभिन्न राजाओं एवं पुराण-पुरुषों के जीवनवृत्त का सविशेष वर्णन है। **मूल्य : 550 रुपये**

**हरिवंशपुराण** आचार्य जिनसेन

सम्पादक एवं अनुवाद डॉ. पन्नालाल जैन

इस कृति में बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ के त्यागमद्य जीवनचरित के साथ-साथ इस वंश में उत्पन्न तीर्थंकरों, महान राजाओं, नारायणों, प्रतिनारायणों के अलावा वासुदेव कृष्ण, बालभद्र, कृष्णापुत्र प्रद्युम्न तथा पाण्डवों और कौरवों का लोकप्रिय चरित है। **मूल्य : 700 रुपये**

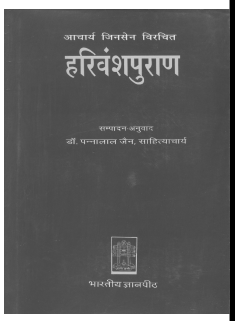


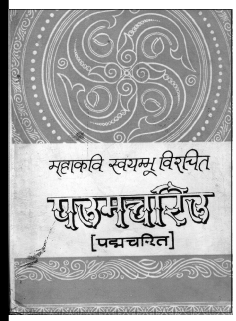


**पउमचरिउ**(पद्मचरित) महाकवि स्वयम्भू

सम्पादक एवं अनुवाद : डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन,

राम का एक नाम पद्म भी था। जैन कृतिकारों को यही नाम सर्वाधिक प्रिय लगा। इसलिए इसी नाम को आधार बनाकर प्राकृत, संस्कृत एवं अपभ्रंश में काव्यग्रन्थों की रचना गयी। प्राकृत में विमलसूरि का 'पउमचरिय' रामकथा की विशिष्ट कृति है। **प्रेस में**

**गोम्मटसार** (जीवकांड) आचार्य नेमिचन्द्र

सम्पादक एवं अनुवाद : डॉ. ए. एन. उपाध्ये, पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री (दो खंडों में)

प्राकृत मूल गाथा, श्रीमत् केशववर्णी विरचित कर्णाट-वृत्ति जीवतत्त्व-प्रदीपिका संस्कृत टीका तथा हिन्दी अनुवाद एवं विस्तृत प्रस्तावना के साथ प्रकाशित हुआ।

**मूल्य : प्रथम 400, द्वितीय 450 रुपये**

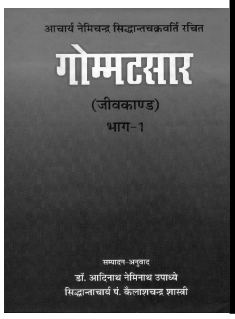


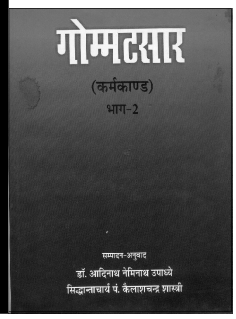


**गोम्मटसार** (कर्मकांड) आचार्य नेमिचन्द्र

सम्पादक एवं अनुवाद : डॉ. ए. एन. उपाध्ये, पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री (दो खंडों में)

प्राकृत मूल गाथा, श्रीमत् केशववर्णी विरचित कर्णाट-वृत्ति जीवतत्त्व-प्रदीपिका संस्कृत टीका तथा हिन्दी अनुवाद एवं विस्तृत प्रस्तावना के साथ प्रकाशित हुआ।

**मूल्य : प्रथम 500, द्वितीय 600 रुपये**

## संस्कार-संहिता

पं. सनतकुमार, पं. विनोद कुमार जैन

संस्कारों के द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव और भावों का विशेष महत्त्व है। कोई संस्कार कब, कैसे, क्यों, किसे, कहाँ के आधार पर ही करना श्रेयस्कर होता हैं, इसके सम्यक् निर्धारण के लिए इस पुस्तक में संस्कारों के क्रम, समय, मुहूर्त, अवस्था तथा संस्कारों की सम्यक्विधि का निरूपण किया गया है। **मूल्य : 320 रुपये**

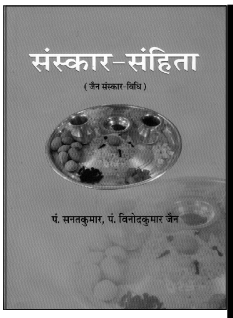


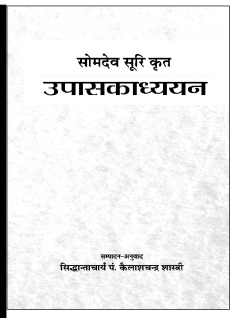


## उपासकाध्ययन

सम्पादक एवं अनुवाद : पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री

जैनधर्म के साथ ही वैशेषिक, पाशुपत, शैव, बौद्ध, जैमिनीय, चार्वाक आदि अनेक जैनेत्तर सम्प्रदायों के आचार विषयक धार्मिक एवं दार्शनिक सिद्धान्तों की विस्तार से चर्चा की गयी है।

**मूल्य : 800 रुपये**

## धर्मामृत (अनगार, सागार) (दो खडों)

सम्पादक-अनुवाद : कैलाशचन्द्र शास्त्री

दिगम्बर जैन परम्परा में साधुवर्ग और श्रावकवर्ग के लिए जिस आचार-धर्म का पालन उद्दिष्ट है उसका अधिकृत, विद्वत्ता तथा सर्वांगीण विवेचन प्रस्तुत करने वाली अद्वितीय कृति है 'धर्मामृत'।

**मूल्य : 400, 530 रुपये**

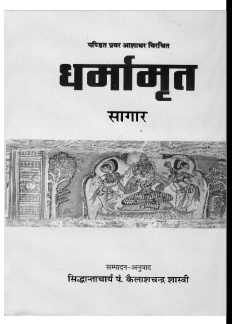


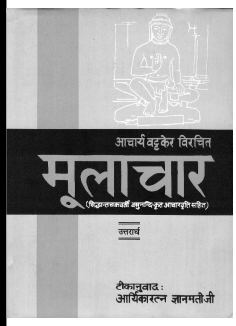


## मूलाचार (दो खंडों)

सम्पादक-अनुवाद : आर्यिकरत्न ज्ञानमती

मूलाचार सबसे प्राचीन ग्रन्थ है जिसमें दिगम्बर मुनियों के आधार-विचार-साधना और गुणों का क्रमबद्ध प्रामाणिक विवरण है। ग्रन्थकार हैं आचार्य वट्टकेर जिन्हें अनेक विद्वान् आचार्य कुन्दकुन्द के रूप में मानते हैं।

**मूल्य : 400, 350 रुपये**

## वसुनन्दि-श्रावकाचार आचार्य वसुनन्दी

सम्पादक : पं. हीरालाल जैन

श्रावक-धर्म के क्रमिक-विकास और छुल्लक-ऐलक जैन गहन विषय पर लेखनी चलाना सचमुच दुस्तर सागर में प्रवेश कर उसे पार करने जैसा कठिन कार्य है। तथापि जहाँ तक मेरे से बन सका, शास्त्राधार से कई विषयों पर कलाम चलाने का अनधिकार प्रयास किया है।

**मूल्य : 400 रुपये**

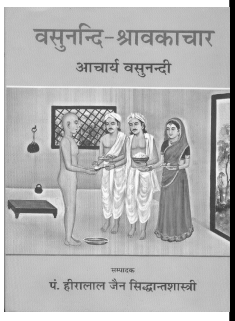


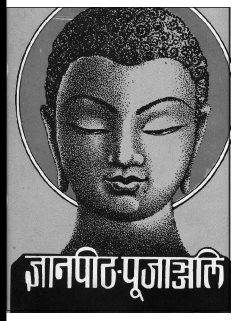


## ज्ञानपीठ पूजांजलि

(जैन पूजा, व्रत, स्तोत्रपाठ आदि संग्रह)

सम्पादक-अनुवाद :

ए. एन. उपाध्ये, फूलचन्द्र शास्त्री

'ज्ञानपीठ-पूजाञ्जलि' जैन श्रावक-श्राविकाओं पूजा-पाठ स्तुति-स्तोत्र, स्वाध्याय-पाठ, आरती-जाप आदि का एक महत्त्वपूर्ण और उपयोगी संग्रह है। **मूल्य : 300 रुपये**

## महाबंधो (सात खंडों में)

सम्पादक एवं अनुवाद : पं. फूलचन्द्र

भगवन् भूदबली कृत 'महाबन्धो' श्रेष्ठ रचना है। इतना ही नहीं, विश्व के कर्म-सम्बन्धी ग्रन्थ होने के कारण यह महाशास्त्र भूदबलि स्वामी के पश्चाद्वर्ती प्राय: सभी महान शास्त्रकारों का बन्ध के विषय में मार्गदर्शक रहा है।

**मूल्य : एक, दो-220, तीन, चार- 300, पाँच-350, छः, सात 300 रुपये**

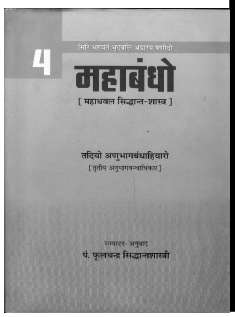


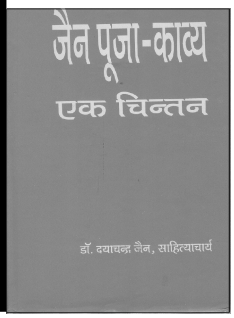


## जैन पूजा-काव्य एक चिन्तन

डॉ. दयाचन्द्र जैन, साहित्याचार्य

जैन दृष्टि में पूजा-द्रव्य पूजा और भाव पूजा-का वास्तविक अर्थ मौलिक सुख की प्राप्ति नहीं, बल्कि अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति के लिए इष्ट या आराध्य के पवित्र गुणों का कीर्तन करना है। पूजा के तत्त्व का आशय है। आत्मा से परमात्मा दशा को प्राप्त करना ही पूजा का वास्तविक प्रयोजन है। **मूल्य : 100 रुपये**

## भक्ति अँजुरी

मुनि क्षमासागर

आचार्य वादिराज की भक्ति की गंगा जब मुनि श्री क्षमासागर जी की भक्ति में समाहित होकर बहती है तो तृप्ति के असीम सागर का अहसास होता है। ऐसा शायद इसलिए भी हो सकता है क्योंकि स्वयं मुनि श्री अपने गुरु के प्रति गहरे समर्पित होकर उनकी भक्ति के रस में डूबे रहते थे। **मूल्य : 75 रुपये**

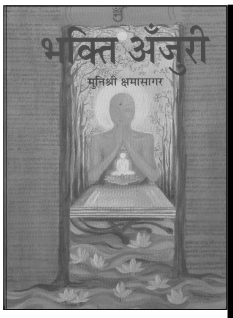


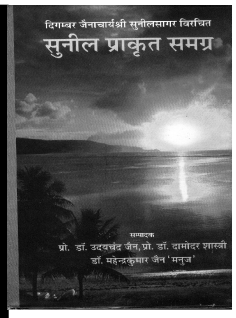


## सुनील प्राकृत समग्र

आचार्य सुनील सागर

आचार्य श्री सुनीलसागरजी महाराज द्वारा सन् 2003 से 2015 के मध्य रची गयी प्राकृत कृतियों का प्रतिनिधि संग्रह है। प्रस्तुत संस्करण में दस प्राकृत ग्रन्थों का समायोजन किया है। **मूल्य : 360 रुपये**

## ध्यानस्तवः भास्करनन्दी

सम्पादक-अनुवाद : सुजुको ओहिरा

'ध्यानस्तवः' भास्करनन्दि का एक सौ पदों का काव्य है, जिसे उन्होंने अपने चित्त को एकाग्रता के लिए रचा है। अपनी विधा में यह जिनदेव के प्रति की गयी प्रार्थना है। इस ग्रन्थ में कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार हुआ है।
**मूल्य : 210 रुपये**

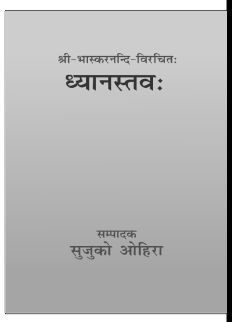


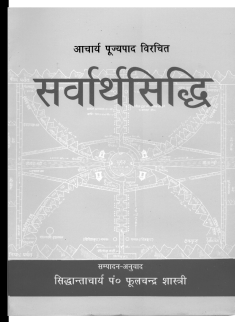


## सर्वार्थसिद्धि आचार्य पूज्यपाद

सम्पादक एवं अनुवाद : पं. फूलचन्द्र शास्त्री

'तत्त्वार्थसूत्र' जैनविद्या का एक प्राचीनतम ग्रन्थ है और संस्कृत में सूत्र-पद्धति से जैन सिद्धान्त का विधिवत् संक्षेप में परिचय करानेवाला सम्भवतः सर्वप्रथम ग्रन्थ है। इसकी हिन्दी विवेचना सर्वार्थसिद्धि में मर्म खोल कर रख दिया है। **मूल्य : 350 रुपये**

## तत्त्वार्थवार्तिक (राजवार्तिक)

(दो खंडों में)

मूलकर्ता भट्ट अकलंकदेव

सम्पादन-अनुवाद : प्रो. महेन्द्रकुमार जैन

तत्त्वार्थवार्तिक का मूल आधार आचार्य देवनन्दी पूज्यपाद की सर्वार्थसिद्धि है। दूसरे शब्दों में, वृक्ष में बीज की तरह इसमें सर्वार्थसिद्धि का पूरा तत्त्वदर्शन समाविष्ट है।
**मूल्य : प्रथम 250, द्वितीक 300 रुपये**

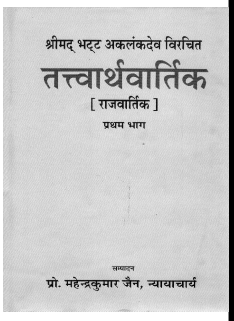


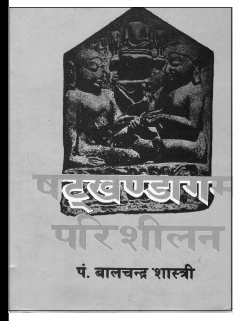


## षट्खण्डागम-परिशीलन

पं. बालचन्द्र शास्त्री

'षट्खण्डागम' जैन दर्शन और सिद्धान्त का सर्वाधिक प्रामाणिक एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसकी टीकाओं का इतना विपुल विश्लेषणात्मक साहित्य है कि आचार्यों के ज्ञान की विशदता और शब्दार्थ-साधना की तन्मयता को देखकर बुद्धि हतप्रभ हो जाती है।
**मूल्य : 300 रुपये**

## तत्त्वार्थसार आचर्य अमृतचन्द्र

हिन्दी टीका सम्पादक : मुनि अमितसागर

सम्पूर्ण ग्रन्थ नौ अधिकारों में निबद्ध है। पहले आठ अधिकारों में जीव से लेकर मोक्षतत्त्व की निरूपणा है। नौवाँ अधिकार 'उपसंहार' है, जिसमें सातों तत्त्वों को जानने के उपाय से लेकर निश्चय और व्यवहार मोक्षमार्ग के स्वरूप का विस्तार से वर्णन किया गया है।
**मूल्य : 390 रुपये**

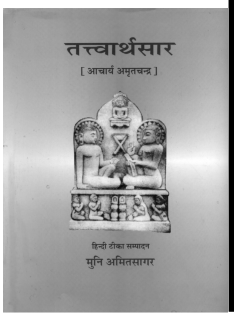


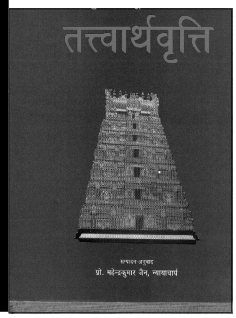


## तत्त्वार्थवृत्ति

सम्पादक-अनुवाद : प्रो. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य

जैन आगम में लोकप्रिय ग्रन्थ 'तत्त्वार्थाधिगमसूत्र' को संक्षेप में 'तत्त्वार्थसूत्र' और दूसरे शब्दों में 'मोक्षशास्त्र' कहते हैं। इसके प्रणेता आचार्य उमास्वामी का समय प्रथम शताब्दी ईस्वी माना जाता है। इसकी टीकाएँ सभी कालखण्डों में, सभी आकारों में और विविध दृष्टिकोणों से लिखी गयी है। **मूल्य : 300 रुपये**

## जैनदर्शन में नयवाद

डॉ. सुखनन्दन जैन

नयवाद का जैनदर्शन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। अनेकान्त और स्याद्वाद के सिद्धान्तों का विवेचन इसी के साथ किया जाता है।

**मूल्य : 225 रुपये**

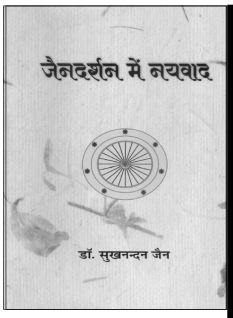


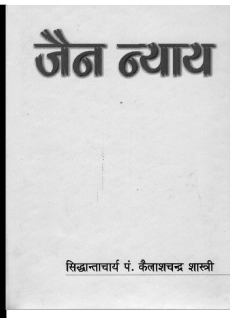


## जैन न्याय

सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री

जैन दर्शन में तत्त्वज्ञान से सम्बद्ध विषयों का प्रतिपादन होता है जबकि जैन न्याय में मूल रूप से प्रमाणशास्त्र की प्रधानता रहती है। प्रस्तुत कृति में लेखन ने प्रमाण का स्वरूप, उसके भेद-प्रभेद, विषय, फल और प्रमाण-भास की पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष के साथ विस्तार से चर्चा की है। **मूल्य : 200 रुपये**

## SAMAYASARA ( समयसार ) :

Acharya Kundakunda

English with Translation & Commentary in English based on Acharya Amerit-achandra's tike by A. Chakravarti

The 'Samayasara', one of his monumental works, signified the truth of spirituality. The philosophy interknit in it is of a puritanic type with no room for tantra and mantra. Rs. 450

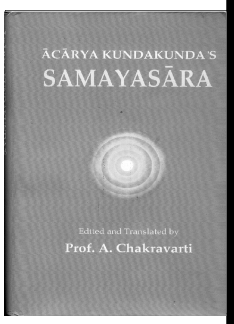


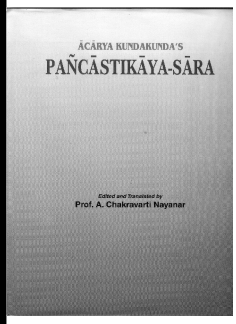


## PANCASTIKAYASARA ( पंचास्तिकाय-सार ) :

Acharya Kundakunda

Translation & Commentary by Pro. A. Chakravarti

Here is presented a new edition of Achrya Kundakund's 'Pancastikaya-sara' in Prakrit, edited with translation and commentary by Prof. A. Chakravarti. Rs. 250

## APTA-MIMAMSA:

Acharya Samantabhadra

Translation & Commentary by Saratchandra Ghoshal

A Sanskrit treatise with 114 verses in ten chapters, Apta-mimamsa means 'propounding the evident one.' It expounds the Jaina concept of 'omniscient' in a philosophical-cum-logical manner. As a matter of fact, if is an eulogy. Rs. 180

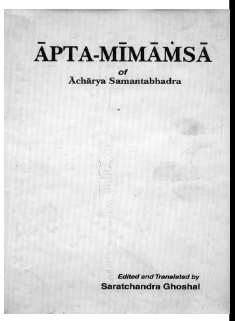


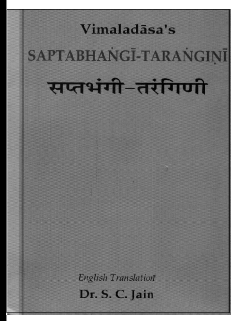


## SAPTBHANGI-TARARANGINI

**( सप्तभंगी-तरंगिणी )** : Vimaladas

Translation & Commentary by Dr. S. C. Jain

Saptabharigi-tararigini is a rare and imporrtant treatise of Jaina philosophy. Rs. 120

## Tribhangi-Sar

**( त्रिभंगी-सार )** : Shri Jina Taran Swami

English Translation and Explanation by Dasharath Jain

Therefore, the wise and prudent person must clearly know and realise and distinction between soul and non-soul matters and direct all his efforts, time and energy toward the purification of soul by way of liberating it from all karmic filth or karmic impurities. Rs. 120

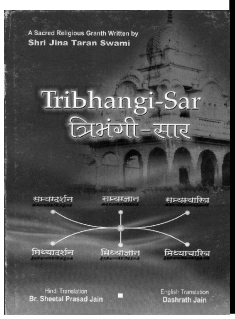


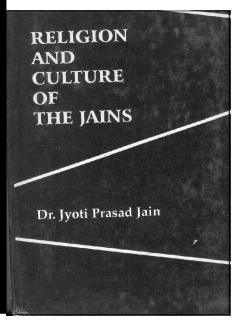


## RELIGION & CULTURE OF THE JAINS

Dr. Jyoti Prasad Jain

This is a handy compendium of Jainism for the general reader who is desirous of acquainting himself with the genesis, history and tradition, doctrine and philosophy, way of life and mode of worship, art, literature, and other cultural aspects of this ancient, but still flourising religion of India. Rs. 150

## My Reminiscent Soul

: Dr. V. K. Jain

These poems of Dr. V. K. Jain are of sound philosophy and mellow metaphor comparable to the glorious poems like 'Prospice' of Robert Browning and the 'Wasteland' of T.S. Eliot as Commented by Smt. Mamta Kalia. Rs. 125

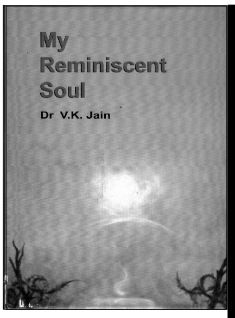


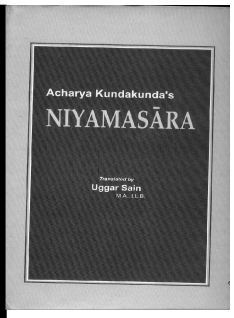


## NIYAMASARA

## ( नियमसार )

: Acharya Kundakunda

Translation by : Uggar Jain

Niyamasara is one of the most renowned adhyatmika works of Acharya Kundakunda. It deals with the path of liberation, which is Right Belief, Right Knoweldge and Right Conduct, the three jewels of the Jaina faith combined. Rs. 130

## योगसारप्राभृत : आचार्य अमितगति

सम्पादक एवं अनुवाद

जुगलकिशोर मुख्तार

**मूल्य : 180 रुपये**

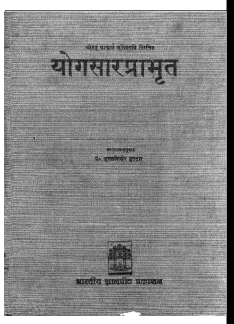


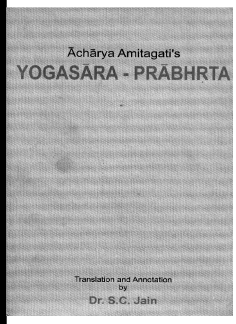


## YOGASARA-PRABHRTA

Acharya Amitagati

Translation & Annotation by

Dr. S. C. Jain

Religion (dharma) basically aims at granting excellent ecstasy and bliss to the jivas. The way leading to this high and noble aim of life is constituted by Right Faith, Right Knowledge and Right Conduct, which imply an attitude of mind, a comprehension of the necessary principles and an observance of a course of discipline respectively. Rs. 150

## न्यायविनिश्चयविवरण (दो खडों में)

वादिराज सूरि

सम्पादक-अनुवाद : प्रो. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य

भारतीय न्याय-साहित्य में आचार्य अकलंकदेव (आठवीं सदी) के ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके अब तक जिन ग्रन्थों का पता चला है उनमें 'लघीयस्त्राय', 'प्रमाणसंग्रह', 'न्यायविनिश्चय' और 'सिद्धिविनिश्चय' पूर्णतया न्याय के विषय हैं।

**मूल्य : प्रत्येक 300 रुपये**

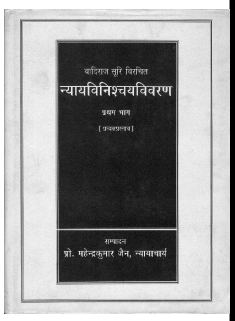


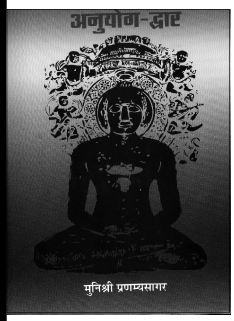


## सत्संख्यादि अनुयोगद्वार (दर्शन)

मुनिश्री प्रणम्यसागर

प्रस्तुत ग्रन्थ में सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व के आधार से सभी गुणस्थान और मार्गणाओं को स्पष्ट किया जाता है।

**मूल्य : 330 रुपये**

## पंचसंग्रह (संस्कृत) आचार्य अमितगति

सम्पादक एवं अनुवाद : पं. वंशीधर

श्रीमद् अमितगति सूरि (ग्यारहवीं सदी) विरचित संस्कृत ग्रन्थ 'पञ्चसंग्रह' जैन कर्म-सिद्धान्त का विवेचन करने वाला महान् ग्रन्थ है। इसकी रचना के पीछे ग्रन्थकार का मुख्य उद्देश्य कर्म-सिद्धान्त जैसे दुरूह और गहन विषय को सरल पद्धति से सामान्य जन के लिए उपयोगी बनाना रहा है। **मूल्य : 600 रुपये**

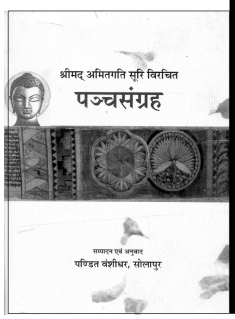


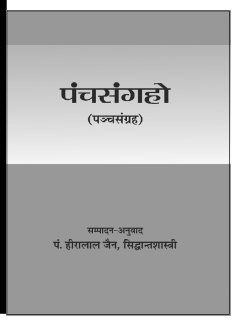


## पंचसंगहो (प्राकृत पंचसंग्रह)

सम्पादक-अनुवाद : पं. हीरालाल

इस ग्रन्थ में जीवसमास, प्रकृतिसमुत्कीर्तन, बन्धस्तव, शतक और स्पततिका नामक पाँच प्रकरणों के द्वारा जीव और कर्म की विविध दशाओं का तलस्पर्शी गम्भीर विवेचन अत्यन्त सुगम शैली और सरल भाषा में किया गया है।

**मूल्य : 800 रुपये**

## मंगलमन्त्र णमोकार : एक अनुचिन्तन

सम्पादक-अनुवाद : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

णमोकार महामन्त्र की गरिमा सर्वविदित है। इसके उच्चारण की भी महिमा है। साथ ही यह साधना और अनुभूति का विषय है। श्रद्धा और निष्ठा होने पर यह आत्म-कल्याण और लौकिक अभ्युदय दोनों का मार्ग प्रशस्त करता हैं। **मूल्य : 220 रुपये**

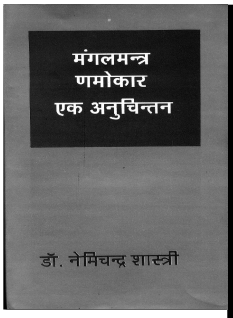


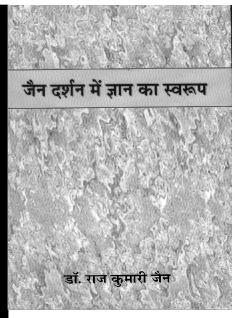


## जैन दर्शन में ज्ञान का स्वरूप

डॉ. राज कुमारी जैन

भारतीय संस्कृति में ज्ञान के विषय की 'अर्थ' कहा गया है। इस शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है 'अर्थ्यते अभिव्यंजते इति अर्थ:' अर्थात् जिसकी अर्थना की जाती है, जिसे चाहा जाता है उस प्रयोजनभूत पदार्थ को अर्थ कहा जाता है। **मूल्य : 430 रुपये**

## बारस अणुवेक्खा सर्वोदय टीका सहित (दो खंडों में)

टीकाकार : आचार्यश्री विराग सागर

सम्यग्ज्ञात तत्त्वों का मन में बारम्बार अभ्यास करना या चिन्तन-मनन करना अनुप्रेक्षा है। इसके बल पर ही ध्याता धर्मध्यान में स्थिर हो पाता है, उससे च्युत नहीं होता। अनुप्रेक्षा के विषय भेद की दृष्टि से बारह भेद प्रसिद्ध हैं। जिनका इस पुस्तक, दो खंडों में विस्तृत विवेचन है। **मूल्य : 490 रुपये**

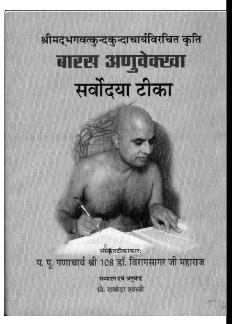


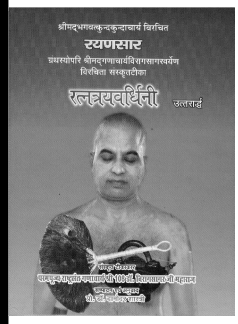


## रयणसार रत्नत्रयवर्धिनी

टीकाकार : आचार्यश्री विराग सागर

सम्पादक एवं अनुवाद : प्रो. डॉ. दमोदर शास्त्री

श्रमण संस्कृति के उन्नायक, आचार्य कुन्दकुन्द का नाम विशेष आदर व श्रद्धा के साथ लिया जाता हैं। इन्होंने भव्य आत्माओं के कल्याण के लिए शौरसेनी प्राकृत में अनेक ग्रन्थ लिखे, जिसमें 'रयणसार' ग्रन्थ का विशिष्ट स्थान है। जिनपर उक्त टीका इसके अर्थ को विवेचित करती है। **मूल्य : 650 रुपये**

## जैन तत्त्वविधा

मुनि प्रमाणसागर

तीर्थंकर की देशना के कैवल्य-सागर से उद्भूत प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग रूप अप्रतिम 'वेद-रत्नों' की ज्ञानासभा को श्री माघनन्दियोगीन्द्र ने देवभाषा संस्कृत में दो सौ सूत्रों में निबद्ध किया।

**मूल्य : 350 रुपये**

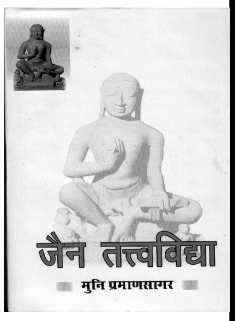


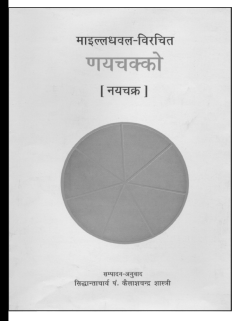


## णयचक्को (नयचक्र) : माइल्ल धवल

सम्पादक एवं अनुवाद : पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री

नयचक्र की चर्चा में द्रव्य और पर्याय के अतिरिक्त आगम-अध्यात्म की कथन पद्धति में भेद होने के कारण उनके भेद-प्रभेदों का ज्ञान कराया जाता है। यहीं कारण है कि द्रव्य-स्वभाव प्रकाशक को जिन बारह अधिकारों में विभक्त किया गया है, उनमें से नय एक है।

**मूल्य : 150 रुपये**

## जैन दर्शन का अस्तित्ववादी चिन्तन

डॉ. प्रद्युम्न कुमार अनंर्ग

वैश्विक दर्शन और साहित्य के इतिहास में पिछली सदी बौद्धिक पुनर्जागरण का काल रही है। न केवल भारतीय चिन्तकों, बल्कि पूर्व और पश्चिम के कितने ही मनीषी दार्शनिकों ने अपने-अपने ढंग से मानवीय अस्तित्व का अन्वेषण और विश्लेषण कर सांसारिक सुख-दुख की त्रासदी तथा मृत्यु की अपरिहार्यता का भयावह चित्र खींचा है।

**मूल्य : 100 रुपये**

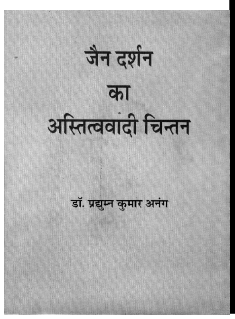


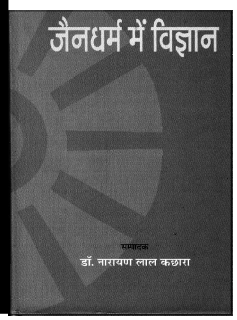


## जैनधर्म में विज्ञान

सम्पादक डॉ. नारायण लाल कछारा

जैनधर्म-दर्शन में विज्ञान सम्बन्धी आलेख। जनदर्शन में वैज्ञानिकता को लेकर अर्से से चर्चाएँ होती रही हैं, परन्तु धर्म-दर्शन में निहित विज्ञान को प्रमाणित करना कुछ कठिन ही होता हैं। प्रस्तुत पुस्तक में अनेक प्रमाण और तर्कों से इसकी वैज्ञानिकता को सिद्ध करने का प्रयास है। **मूल्य : 200 रुपये**

## जैन दर्शन में पदार्थ विज्ञान

सम्पादक : जिनेन्द्र वर्णी

इस पुस्तक को विशेषता यह है कि इसमें उन्होंने एक आधुनिक वैज्ञानिक की दृष्टि को सन्त की दार्शनिक दृष्टि से सम्यक्त करके पदार्थ-विज्ञान के रहस्यों को-जीव मृद्गल धर्म, अधर्म, आकाश, काल आदि की प्रकृति ोक बहुत ही सरल, बोधगम्य भाषा में प्रतिपादित किया है।

**मूल्य : 330 रुपये**

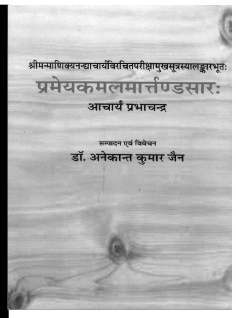


## प्रमेयकमलामार्त्तण्डसारः

मूलग्रन्थकर्ता : आचार्य प्रभाचन्द्र

सम्पादक-अनुवाद : डॉ. अनेकान्त कुमार जैन

इसमें आचार्य प्रभाचन्द्र ने जैन दार्शनिक सिद्धान्तों के परिप्रेक्ष्य में तत्कालीन विभिन्न अन्याय भारतीय दर्शनों के प्रमुख सिद्धान्तों की प्रभावी रूप में समीक्षा की है। **मूल्य : 600 रुपये**

## दिगम्बरत्व और दिगम्बर मुनि

(उपन्यास)

बाबू कामताप्रसाद जैन

इसमें दिगम्बरत्व के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक सत्य का प्रामाणिक विवेचन है। साथ ही, हरेक धर्म के मान्य ग्रन्थों से, चाहे वह वैदिक धर्म हो, ईसाई अथवा इस्लाम धर्म का हो—इस विषय की पुष्ट किया गया है।

**मूल्य : 180 रुपये**

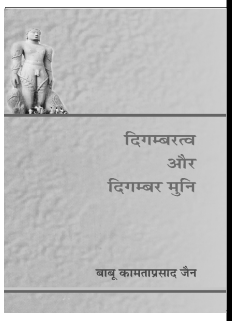


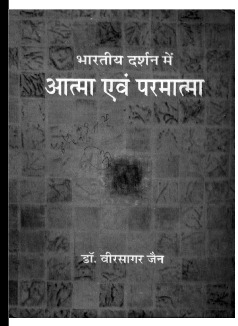


## भारतीय दर्शन में आत्मा एवं परमात्मा

डॉ. वीरसागर जैन

प्रस्तुत कृति के विद्वान लेखक ने दर्शनशास्त्र के इस गूढ़ गम्भीर विषय को बहुत ही सरल-सुबोध शैली में युक्तियुक्त ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। **मूल्य : 160 रुपये**

## सल्लेखना/संथारा

मुनिश्री प्रणम्यसागर

यह सल्लेखना श्रावक या श्रमण कोई भी कर सकता है। श्रावक के लिए सल्लेखना मरण का उल्लेख सर्वप्रथम जैनदर्शन के सर्वमान्य ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र में मिलता है। इस तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थ के रचयिता आचार्य उमास्वामी हैं जो ईसा की प्रथम शताब्दी के प्रमुख आचार्य हैं—

'मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता'—अध्याय 7 सूत्र 22 **मूल्य : 35 रुपये**

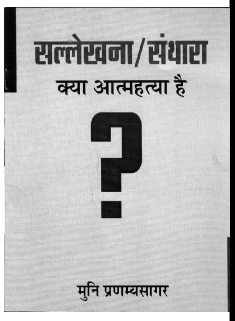


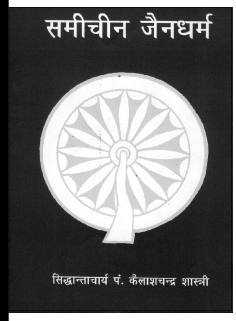


## समीचीन जैनधर्म

सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री

जैनधर्म सम्बन्धी निश्चय और व्यवहारपरक विवादों को दूर कर जिनवाणी के यथार्थ स्वरूप की हृदयंगम कर सकेंगे तथा एकान्तवाद रूप मिथ्यात्व के चंगुल से छूटकर सच्चे जैन बनने में समर्थ हो सकेंगे। **मूल्य : 80 रुपये**

## जैन प्रतीक दर्शन

डॉ. जया जैन

धर्म शब्दातीत है। जहाँ सामान्य भाषा पद्धति अनुभूतियों को व्यक्त करने में असमर्थ रहती है, वहाँ प्रतीक सत्य के साक्षात्कार के माध्यम बन जाते हैं। भारतीय दर्शन में जैन दर्शन का विशिष्ट स्थान है। **मूल्य : 350 रुपये**

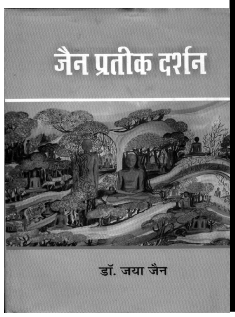


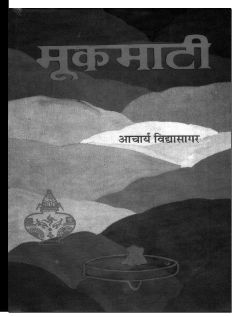


## मूक माटी (महाकाव्य)

आचार्यश्री विद्यासागर जी

आचार्य विद्यासागर जी की काव्य-प्रतिभा का यह चमत्कार है कि उन्होंने मूकमाटी जैसी निरीह, पद-दलित एवं व्यथित वस्तु को महाकाव्य का विषय बनाकर उसकी मूक वेदना और मुक्ति की आकांक्षा को वाणी दी है।

**मूल्य : 400 रुपये**

**जैनेन्द्रमहावृत्तिः** आचार्य अभयनन्दी

संस्कृत वाङ्मय में अन्य विधाओं की तरह व्याकरण शास्त्र का अपना महत्त्व है। अनेक जैनाचार्यों ने व्याकरण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण रचनाएँ प्रदान की हैं। आज जो जैनाचार्यों द्वारा लिखे गये व्याकरण ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, उनमें तीन व्याकरण ग्रन्थों का उल्लेख विशेष रूप से किया जा सकता है, ये हैं—जैनेन्द्र, शाकटायन और सिद्धहैम।

**मूल्य : 600 रुपये**

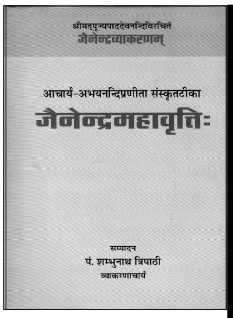


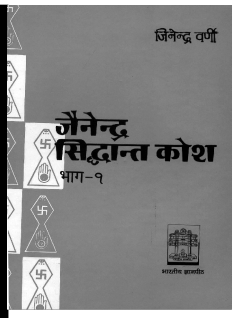


**जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश** (पाँच खंडों में)

जिनेन्द्र वर्णी

इसमें जैन तत्त्वज्ञान, आचारशास्त्र, कर्म सिद्धान्त, भूगोल, पौराणिक चरित्र एवं ऐतिहासिक व्यक्ति, राजपुरुष तथा राजवंश, आगम-शास्त्र व शास्त्रकार, धार्मिक तथा दार्शनिक सम्प्रदाय आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित छह हजार से अधिक शब्दों का सांगोपांग विवेचन किया गया है।

**मूल्य : एक 375; दो 400; तीन 400; चार 375; पाँच** (शब्दानुक्रमणिका), **280 रुपये**

**नाममाला सभाष्य**

महाकवि धनंजय

पुस्तक का सम्पादन पं. शम्भूनाथ त्रिपाठी, व्याकरणाचार्य ने बड़ी सावधानी से तथा प्रमाणों के उपयुक्त उद्धरण देते हुए किया है। ग्रन्थ के अन्त में 'अनेकार्थ निघण्टु' एवं 'एकाक्षरों कोश' की भी सम्मिलित कर लिया गया है।

**मूल्य : 140 रुपये**

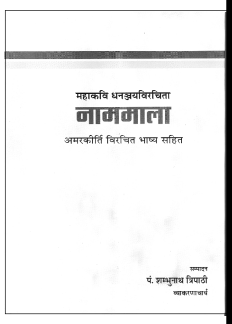


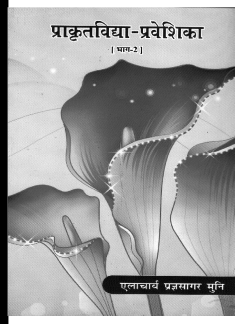


**प्राकृतविद्या-प्रवेशिका**

आचार्य प्रज्ञा सागर (दो खंडों में)

भाषा को सुनिश्चित और स्थिर रूप प्रदान करने में व्याकरण का योगदान अनुपेक्षणीय होता है। बोलियों से बनने वाली भाषाएँ बोलियों से ही नये-नये शब्दों का आहरण करके पुष्ट होती हैं। **मूल्य : एक-110; दो-120 रुपये**

**प्राकृत अनुवाद कला**

स्नेहलता जैन

'प्राकृत अनुवाद कला' में इसी शौरसेनी और अर्धमागधी आगम ग्रन्थों से प्राकृत के व्याकरणिक प्रयोग उद्धृत किए गये हैं। अधिकांश प्रयोग शौरसेनी ग्रन्थों से एवं कुछ अर्धमागधों ग्रन्थों से हैं। **मूल्य : 200 रुपये**

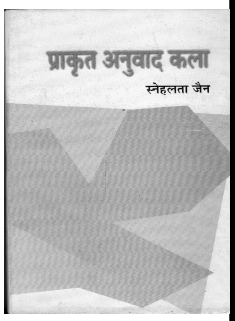


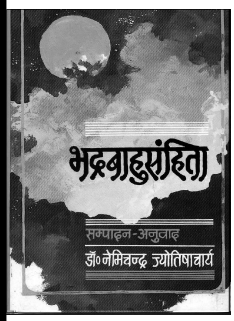


**भद्रबाहुसंहिता** (संस्कृत, हिन्दी)

सम्पादक एवं अनुवाद : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

फलित ज्योतिष में अष्टांग-निमित्त का प्रतिपादन करनेवाला यह एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। निमित्तशास्त्रविदों की मान्यता है कि प्रत्येक घटना के घटित होने के पहले प्रकृति में कुछ विकार उत्पन्न होते देखे जाते हैं जिसकी सही-सही पहचान से व्यक्ति भावी शुभ-अशुभ घटनाओं का सरलापूर्वक परिज्ञान कर सकता है। **मूल्य : 300 रुपये**

**भारतीय ज्योतिष**

डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, ज्योतिषाचार्य

भारतीय ज्योतिष का यह नवीनतम संस्करण आपके हाथों में है, जो हिन्दी प्रकाशन जगत् के लिए एक अद्वितीय प्रतिमान तो है ही, ज्योतिष जैसे गम्भीर विषय पर इस पुस्तक की उपयोगिता और लोकप्रियता का भी सार्थक प्रमाण है।

**मूल्य : 400 रुपये**

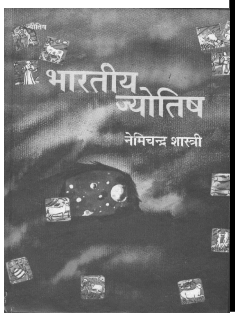


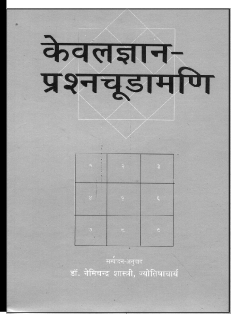


**केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि**

सम्पादक एवं अनुवाद : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, जीवन-मरण, लाभ-हानि, संयोग-वियोग, सुख-दुःख चोरी गयी वस्तु का पता, परदेशी के लौटने का समय, पुत्र या कन्या प्राप्ति, मुकदमा जीतने-हारने की बात-जो कुछ भी चाहें पूरी और उत्तर अपने उत्तर अपने आप प्राप्त करें।

**मूल्य : 120 रुपये**

## गीतवीतरागप्रबन्धः

सम्पादक : डॉ. आर. ने. उपाध्ये

श्रीमदभिनव चारुकीर्ति पंडिताचार्य विरचित 'गीतवीतरागप्रबन्धः' काव्य मूलतः संस्कृत में लिखा। यह काव्य भगवान आदिनाथ ऋषभदेव के जीवन पर आधारित है। इसकी कथा आदिपुराण से ली गयी है।

**मूल्य : 180 रुपये**

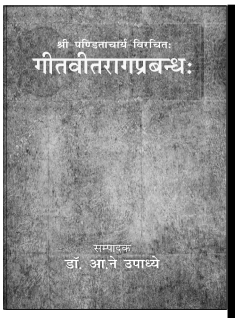


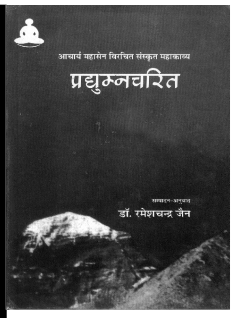


## प्रद्युम्नचरित : आचार्य महासेन

सम्पादक-अनुवाद डॉ. रमेश चन्द्र जैन

श्रीकृष्ण-रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न का प्रसिद्ध पौरणिक चरित्र जैन परम्परा में भी उतना ही समादृत है जितना वैदिक परम्परा में। जैन आचार्यों एवं महाकवियों ने संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश में इस लोकप्रिय नायक के पुण्य चरित्र को आधार बनाकर अनेक काव्यों की रचना की है। **मूल्य : 200 रुपये**

## जिनवर-अर्चना

(पूजा-पाठ एवं स्तोत्र, भजन आदि)

सम्पादक एवं अनुवाद : डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री

जिन-मन्दिर समता का स्थान है। दुनियादारी के कामों को, सांसारिक प्रयोजनों, कामनाओं औक लैकिक भावों को छोड़कर हम धर्मस्थान में जाते हैं। धर्मस्थानक में जाने का एक मात्र प्रयोजन समता भाव की उपलब्धि है।

**मूल्य : 50 रुपये**

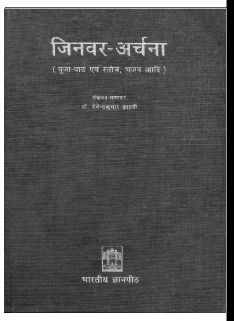


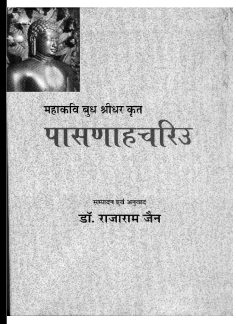


## पासणाहचरिउ

महाकवि बुध श्रीधर

सम्पादक एवं अनुवाद : डॉ. राजाराम जैन

महाकवि बुध श्रीधर (13वीं सदी) द्वारा रचित पौराणिक महाकाव्य, अपभ्रंश की एक अप्रतिम रचना। इसमें जैन शलाकापुरुष तीर्थंकर पार्श्वनाथ की कथावस्तु वर्णित है।

**मूल्य : 320 रुपये**

## समराइच्चकहा

हरिभद्र सूरि

अनुवाद : डॉ. रमेशचन्द्र जैन (भाग दो)

आचार्य हरिभद्र सूरि की, प्राकृत गद्य भाषा में निबद्ध एक ऐसी आख्यात्मक कृति, जिसकी तुलना महाकवि बाणभट्ट की 'कदाम्बरी', जैन काव्य 'यशस्तिलकचम्पू' और 'वसुदेवहिण्डी' से की जाती है।

**मूल्य : प्रत्येक 140 रुपये**

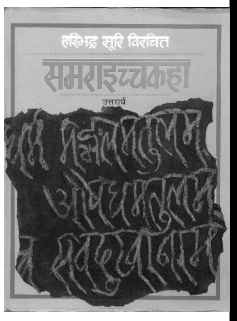


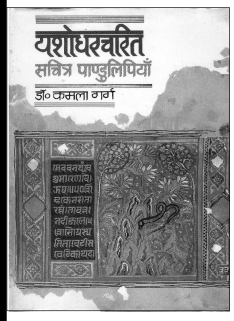


## यशोधरचरित की सचित्र पाण्डुलिपियाँ

डॉ. कमला गर्ग

विभिन्न आचार्यों द्वारा विरचित तथा जैन पुराण-कथा पर आधारित 'यशोधरचरित' की पन्द्रहवीं से आठारहवीं शती तक की अद्यवीध उपलब्ध ऐसी बारह हस्तलिखित सचित्र का विषयगत एवं शैलीगत विश्लेषण।

**मूल्य : 75 रुपये**

## दौलत-विलास (भक्ति-संग्रह)

सम्पादक-अनुवाद : डॉ. वीरसागर जैन

'दौलत-विलास' मध्यकालीन हिन्दी जैन साहित्य की एक ऐसी मनोरम रचना है जो भक्तिस नीकिस अध्यात्म, सदाचरण आदि अनेक उच्च जीवन-सन्देशों की अत्यन्त प्रभावपूर्ण प्रस्तुति के कारण समूची विलास-संज्ञक साहित्य-परम्परा में अपना अनूठा महत्त्व रखती है। **मूल्य : 90 रुपये**

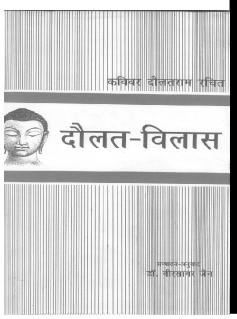


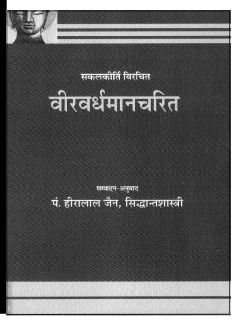


## वीरवर्धमानचरित

सम्पादक एवं अनुवादक : पं. हीरालाल जैन

प्रारम्भ के छह अधिकारों में भगवान् महावीर के पूर्वभवों का चित्रण है और शेष अधिकारों में उनके तीर्थंकर जीवन का। काव्य की भाषा सुगम और शैली सहजरूप से रोचक है।

**मूल्य : 250 रुपये**

**गद्यचिन्तामणि** (कथा साहित्य)
वादीभ सिंह
गद्यचिन्तामणि नामक कथा साहित्य में प्रतिष्ठित है, ग्रन्थ का नाम ही प्रकट करता है कि रचयिता ने इसे उत्कृष्ट गद्य शैली में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। इसमें जीवन पर स्वामी के चरित का गद्यात्मक शैली का वर्णन किया गया है।' **मूल्य : 510 रुपये**

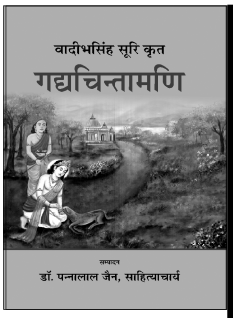


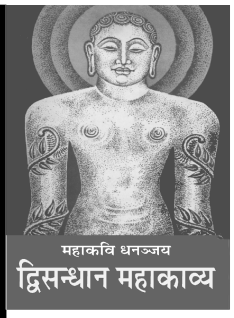


**द्विसन्धान महाकाव्य**
महाकवि धनञ्जय
द्विसन्धान महाकाव्य का प्रत्येक श्लोक एक ओर रामायण की कथा कहता है दूसरी ओर महाभारत की। संस्कृत साहित्य के उपलब्ध द्विसन्धान काव्यों में सर्वाधिक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण यह महाकाव्य संस्कृत भाषा के अद्भुत अर्थ सामर्थ्य का एक सुन्दर निदर्शन है। **मूल्य : 400 रुपये**

**तिरुक्कुरल**
अनुवाद : पं. गोविन्दराय जैन शास्त्री
'तिरुक्कुरळ' के नीतिपरक पद्य पाद हैं। वहाँ किसी माँ ने संभवत: इतनी लोरियाँ नहीं गायी होंगी, जितनी बार इसके छन्दों को गुनगुनाया होगा। **मूल्य : 80 रुपये**

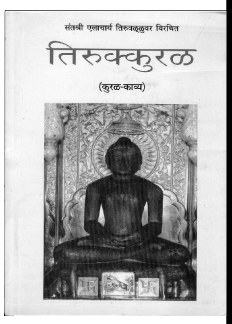


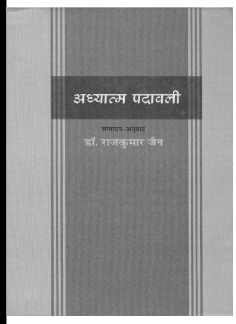


**अध्यात्म पदावली**
सम्पादक-संकलन : डॉ. राजकुमार जैन
हिन्दी के भक्तिकालीन साहित्य में सूर, तुलसी, मीरा आदि कवियों ने भक्ति के जिन मधुर पदों की रचना की है उनमें दास, सखा, प्रेमिका आदि अनेक रूपों में भक्त बनकर अपने आराध्य के प्रति समर्पण भाव का चित्रण है।
**मूल्य : 150 रुपये**

**सावयपन्नत्ती** (श्रावकप्रज्ञप्ति)
सम्पादक-अनुवाद : पं. बालचन्द्र शास्त्री
आचार्य हरिभद्रसूरि ने 401 गाथाओं में प्राकृत भाषा में निबद्ध इस 'सावयपन्नत्ती' (श्रावकप्रज्ञप्ति) श्रावकाचार ग्रन्थ की रचना की। श्रावकाचार का अर्थ है—सम्यग्दृष्टि व्यक्ति का साधु-सन्त के निकट शिष्ट जनों के योग्य आचरण (समाचारी) को सुनना।
**मूल्य : 120 रुपये**

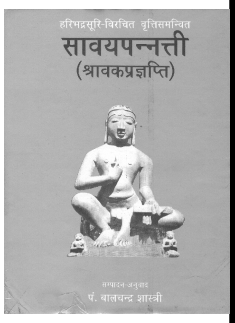


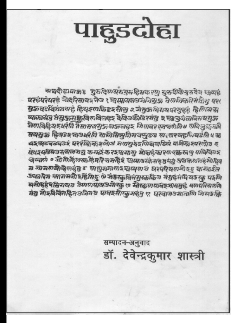


**पाहुडदोहा**
सम्पादक एवं अनुवाद : देवेन्द्र कुमार शास्त्री
भारतीय अध्यात्म की प्राचीनतम परम्परा में भावात्मक अभिव्यंजना को अभिव्यक्त करने वाला एक विशुद्ध रहस्यवादी काव्य। काव्यात्मक धरातल पर आध्यात्मिक श्रमण-परम्परा के स्वरों से सम्बन्धित तथा विद्रोहात्मक बोलें की अनुगूँज से भरपूर नौवीं शताब्दी की सशक्त रचना है। **मूल्य : 200 रुपये**

**श्रीपाल चरित** पं. दौलत कासलीवाल
सम्पादक : डॉ. वीरसागर जैन
हिन्दी-जैन-चरितकाव्य-परम्परा की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति। कृतिकार पं. दौलतराम कासीवाल ने इसमें जैन पुराणों में वर्णित भोपाल-मनासुन्दरी की लोकप्रसिद्ध कथा के माध्यम से शील, संयम आदि श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों का महान सन्देश दिया है।
**मूल्य : 40 रुपये**

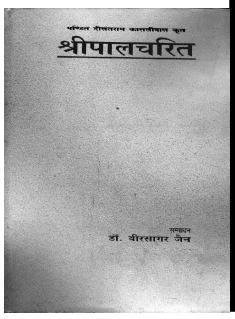


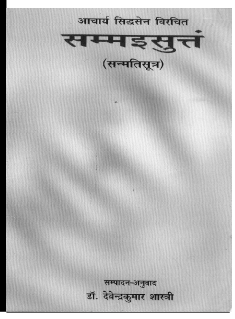


**सम्मइसुत्तं**
(सन्मतिसूत्र)
सम्पादक-अनुवाद डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री
अन्तिम तीर्थंकर महावीर के युग की लोक-प्रचलित जनभाषा है। आगम-साहित्य लोकोत्तर सहधर्मी संस्कृति एवं सभ्यता का एक चित्र पूर्णत: प्रकाशित करता है।
**मूल्य : 120 रुपये**

## AMBIKA : IN JAINA ART AND LITERATURE

Dr. Maruti Nandan Prasad Tiwari
Endeavours to give a detailed and critical assessment of the origin and development of Jaina Yaksi Ambika. Acknowledged as Neminatha, Ambika enjoys and exalted position in Jaina worship.
Rs. 100

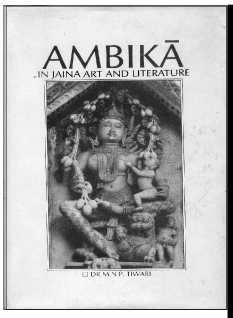


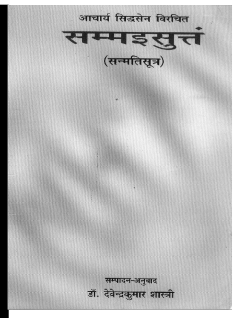


## सम्मइसुत्तं

(सन्मतिसूत्र)
सम्पादक-अनुवाद डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री
अन्तिम तीर्थंकर महावीर के युग की लोक-प्रचलित जनभाषा है। आगम-साहित्य लोकोत्तर सहधर्मी संस्कृति एवं सभ्यता का एक चित्र पूर्णत: प्रकाशित करता है।
**मूल्य : 120 रुपये**

## Mahavir : His Times and Philosophy of Life

This is known as *ahimsa* Similarly, though a prince by birth, Mahavira adopted a mode of living with minimum attachment for the world and its ties.
(Paperback)
Rs. 20

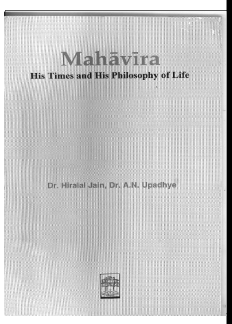


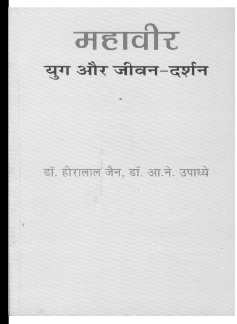


## महावीर : युग और जीवन-दर्शन

डॉ. हीरालाल जैन, डॉ. आ. ने. उपाध्ये
महावीर के जीवन और उनके युग के प्रामाणिक तथ्य इस प्रकार प्रस्तुत किये जाएँ कि हम उन्हें भलीभाँति समझ सकें और अपनी सम्पूर्ण क्षमता के साथ उनके सिद्धान्तों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न कर सकें।
**मूल्य : 20 रुपये**

## भगवान महावीर

डॉ. सुषमा गुणवन्त रोटे
भगवान महावीर आज ऐतिहासिक चरित्र के रूप में सर्वमान्य हैं। यह बात अलग है कि उनके चरित्र पर युग-युगान्तर में अलौकिकता, पौराणिकता, ईश्वरीय भगवत्ता, दिव्यता के आवरण युगीन सन्दर्भ में डाले गये हैं।
**मूल्य : 75 रुपये**

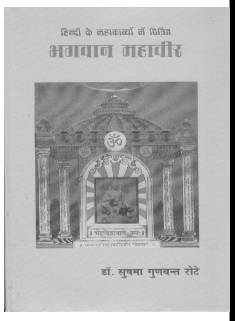


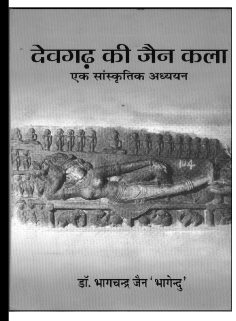


## देवगढ़ की जैन कला

डॉ. भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु'
इसमें देवगढ़ में उपलब्ध सम्पूर्ण जैन सामग्री का अखिल भारतीय कला, स्थापत्य और संस्कृति के व्यापक परिप्रेक्ष्य में न केवल अध्ययन हुआ हैं, प्रच्युत्त पुरातात्त्विक और साहित्यिक साक्ष्यों एवं अनुश्रुतियों के सन्दर्भ में समीक्षात्मक पद्धति पर परीक्षण भी किया गया है।
**मूल्य : 300 रुपये**

## जैन शिलालेख संग्रह

पं. हीरालाल जैन
जैन शिलालेख संग्रह का यह प्रथम प्रसुन माणिकचन्दर ग्रन्थमाला के अन्तर्गत सन् 1928 में प्रकाशित हुआ था। इस भाग में पहली बार देवनागरी में पाँच सौ शिलालेख हिन्दी-सार के साथ संगृहीत हैं। **मूल्य : 235 रुपये**

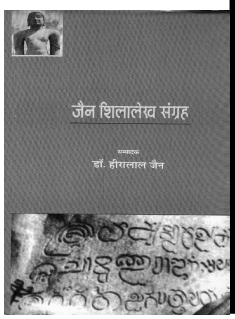


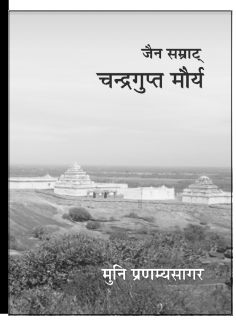


## जैन सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य

मुनि प्रणम्यसागर
चन्द्रगुप्त मौर्य के सम्बन्ध में जैन ग्रन्थों में जो वर्णन मिलता है, वह उसकी राज्यावस्था से ही मिलता है। भद्रबाहु के साथ चन्द्रगुप्त मुनि बनकर चले गये, यह जैन ग्रन्थों में वर्णित है।
**मूल्य : 160 रुपये**

## वर्ण जाति और धर्म

पं. फूलचन्द्र शास्त्री

जैनाचार्य इस तथ्य को अच्छी तरह जानते थे, इसलिए उन्होंने जातिप्रथा प्रारम्भ होने पर उसका खुलकर विरोध किया। और यह सब अब हम भी जानें कि वर्ण, जाति और धर्म के विषय में जैनाचार्यों तथा जैन चिन्तकों की क्या मान्यताएँ है और क्यों।

**मूल्य : 150 रुपये**

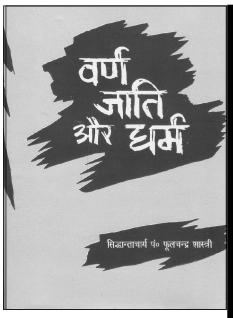


## महाकवि देवीदास के हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन

(जैन हिन्दी साहित्य)

प्रो. विद्यावती जैन

कविवर देवीदास ने चित्रबन्ध काव्य जैसी दुरूह एवं मस्तिष्क को द्राविड़ी प्राणायाम करा देने वाली शैली में भी कुछ आध्यात्मिक लिखकर अपनी विशिष्ट तकनीकी प्रतिभा का परिचय दिया है। **मूल्य : 590 रुपये**

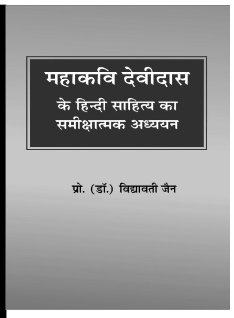


## प्रमुख जैन ग्रन्थों का परिचय

संकलन एवं सम्पादक : प्रो. वीरसागर जैन

जैन ग्रन्थ ज्ञान-विज्ञान के अद्‌भुत भंडार हैं और उनकी बातें आज हजारों वर्षों बाद भी बड़ी वैज्ञानिक और जीवनोपयोगी सिद्ध हो रही हैं। परन्तु वे ग्रन्थ प्राकृत-संस्कृत भाषा में लिखे हुए हैं और जो उनके अनुवाद मिलते हैं

**मूल्य : 400 रुपये**

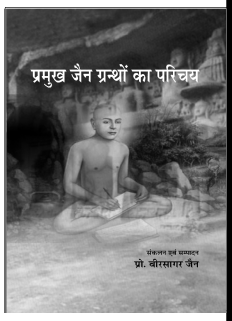


## जैनधर्म परिचय

सम्पादक : प्रो. वृषभ प्रसाद जैन

जैनधर्म में जीवन से जुड़े कुछ विषयों यथा—संगीत, गणित, वास्तु, ज्ञान-विज्ञान, इतिहास, भूगोल, ज्योतिष, अलंकारशास्त्र, भाषाचिन्तन, भारतीय व्याकरण परम्परा को जैनों का अवदान, उनके द्वारा पोषित कोश परम्परा, आयुर्वेद की परम्परा, वैश्विक सन्दर्भ में जैनधर्म आदि इस प्रकार की सामग्री भी इस संचयन में सँजोई गयी है। **मूल्य : 500 रुपये**

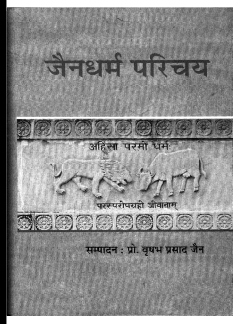


## मिरेकल

अंचल जैन

सभी के हृदय में कर्म सिद्धान्त के प्रति आस्था जगा कर उसकी सजग करके प्रायश्चित के द्वारा कर्मों के प्रतिफल से मुक्त होने की विद्या से अवगत करने वाला ग्रन्थ है।

**मूल्य : 220 रुपये**

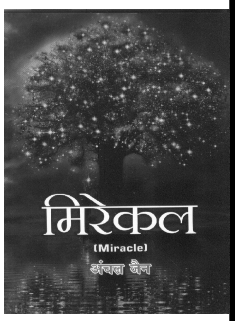


## गोमटेश गाथा नीरज जैन

श्रवणबेलगोला से सम्बन्धित सारी परिचयात्मक सामग्री बड़ी कुशलता से प्रस्तुत कर दी गयी है। विशेषकर 'देव शास्त्र, गुरु की पावन त्रिवेणी' शीर्षक अध्यायों में—वहाँ इस सन्तापहारी परम पावन तीर्थ के धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक महत्त्व को अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से संस्थापित करने वाले महापुरुषों की अमर-गाथा है।

**मूल्य : 300 रुपये**

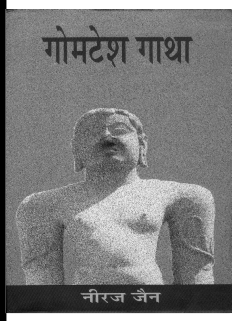


## अपभ्रंश भाषा और साहित्य

राजमणि शर्मा

अपभ्रंश कवियों की प्रकृति उनके नीति-वचनों में भी उजागर होती है। मुक्तक रूप में प्रस्तुत ये वचन/वाणी जीवन-जगत के सत्य को उजागर करते हुए एक नयी सामाजिक संरचना व्यवस्था से ओतप्रोत हैं।

**मूल्य : 150 रुपये**

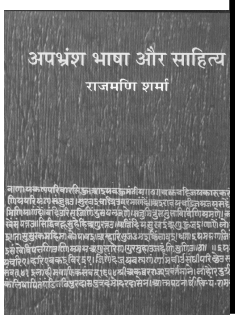


## अन्तर्द्वन्द्वों के पार : गोम्मटेश्वर बाहुबली लक्ष्मीचन्द्र जैन

तीर्थंकर आदिनाथ द्वारा समाज-संरचना की पृष्ठभूमि; उनके पुत्र भरत और बाहुबली के जीवन के मानवीय रूपों एवं उनके मनोजगत् के अन्तर्द्वन्द्वों का मार्मिक चित्रण; आत्मोपलब्धि का रोमांच; चाणक्य, सम्राट चन्द्रगुप्त और श्रुतकेवली भद्रबाहु के इतिहास की प्रस्तुति में उपन्यास। **मूल्य : 45 रुपये**

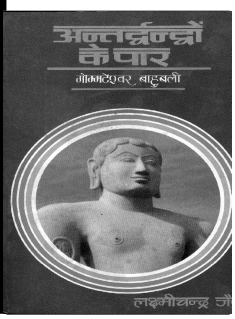

## जैनदर्शन, सिद्धान्त, कर्म एवं न्यायग्रन्थ

( रु. )

**पंचसंग्रह ( संस्कृत ) :** आचार्य अमितगति
सम्पादन-अनुवाद : पण्डित वंशीधर, सोलापुर **600**

**पंचसंगहो ( प्राकृत पंचसंग्रह ) :** मूलकर्ता—अज्ञात
सम्पा. अनुवाद : पं. हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री **800**

**जैन दर्शन में नयवाद :** डॉ. सुखनन्दन जैन **225**

**पंचत्थिकायसंगहो ( पंचास्तिकायसंग्रह ) ( प्राकृत ) :** आचार्य कुन्दकुन्द
सम्पादन-अनुवाद : पं. बलभद्र जैन **80**

**पंचास्तिकायसंग्रह ( प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी ) :** आचार्य कुन्दकुन्द
(आचार्य जयसेन कृत तात्पर्यवृत्ति संस्कृत टीका सहित)
सम्पा.-अनु. : पं. मन्नूलाल जैन, एडवोकेट प्रक्रिया में

**जैन तत्त्वविद्या :** मुनि प्रमाणसागर **350**

**महाबन्ध** (सात भाग) (प्राकृत, हिन्दी) : भगवन्त भूतबली (सात भागों में)
सम्पा.-अनु. : पं. सुमेरुचन्द्र दिवाकर एवं पं. फूलचन्द्र शास्त्री
भाग एक और दो **220,** तीन और चार **300;** पाँच **350;**
भाग 6 से 7 **300**

**तत्त्वार्थराजवार्तिक** (दो भागों में) (संस्कृत, हिन्दी) : भट्ट अकलंक
सम्पा.-अनु. : प्रो. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य,
भाग एक-**250,** भाग दो-**300**

**तत्त्वार्थवृत्ति** (संस्कृत, हिन्दी) : श्रुतसागर सूरि
सम्पा.-अनु. : प्रो. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य **300**

**तत्त्वार्थसार ( संस्कृत, हिन्दी )** आचार्य अमृतचन्द्र,
सम्पा. हिन्दी टीका : मुनि अमितसागर **390**

**योगसारप्राभृत** (संस्कृत, हिन्दी) : आचार्य अमितगति
सम्पा.-अनु. जुगलकिशोर मुख्तार **180**

**नयचक्र** (णयचक्को) (प्राकृत, हिन्दी) : माइल्ल धवल
सम्पा.-अनु. पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री **150**

**षट्खण्डागम-परिशीलन** : पं. बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री **300**

**सर्वार्थसिद्धि** (संस्कृत, हिन्दी) : आचार्य पूज्यपाद
सम्पा.-अनु. : सिद्धान्ताचार्य पं. फूलचन्द्र शास्त्री **350**

**गोम्मटसार, जीवकाण्ड** (दो भाग) : आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती
(कर्णाट वृत्ति, संस्कृत टीका एवं हिन्दी अनुवाद)
सम्पा. एवं अनु. डॉ. आ. ने. उपाध्ये, पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री
प्रथम भाग **500,** द्वितीय भाग **300**

**गोम्मटसार, कर्मकाण्ड** (दो भाग) आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती
प्रथम भाग **400,** द्वितीय भाग **600**

**षड्दर्शनसमुच्चय** (संस्कृत, हिन्दी) : हरिभद्र सूरि
सम्पा.-अनु. : प्रो. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य प्रक्रिया में

**YOGASARA-PRABHRITA** (योगसार-प्राभृत)
Acharya Amitagati
Translation by Dr. S.C. Jain **200**

**APTA-MIMAMSA** (आप्त-मीमांसा) :
Acharya Samantabhadra
Translation and commentary by Sarat Chandra Ghoshal **120**

**PANCASTIKAYA-SARA(** पंचास्तिकाय-सार) :
Acharya Kundakunda
Translation and commentary by prof. A. Chakravarti **250**

**SAMAYASARA** (समयसार) Acharya Kundakunda
Edited with translation and commentary in English
based on Acharya Amritachandra's tika by A. Chakravarti **450**

**NIYAMA-SARA** (नियमसार) Acharya Kundakunda
Translation by Uggar Sain **130**

**SAPTABHANGI-TARANGINI** (सप्तभंगी तरंगिणी):
Vimaladas
Translation by Dr. S. C. Jain **120**

**जैनधर्म परिचय** : सम्पा. : प्रो वृषभ प्रसाद जैन **500**

**जैन न्याय** : सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री **300**

**जैन सिद्धान्त** : सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री **120**

**समीचीन जैनधर्म** : सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री (पे.बै.) **80**

**पाहुडदोहा** (अपभ्रंश का रहस्यवादी काव्य) : मुनि रामसिंह
सम्पा.-अनु. : डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री **200**

**न्यायविनिश्चयविवरण** (संस्कृत) : वादिराज सूरि
सम्पा.-अनु. : प्रो. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य (दो भाग)
प्रत्येक भाग **300**

**सम्मइसुत्तं** (सन्मति सूत्र) (प्राकृत, हिन्दी) : आचार्य सिद्धसेन
सम्पा.-अनु. : डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री **40**

**भावणा-सारो** (प्रा.काव्य) : मुनि सुनीलसागर पेपरबैक **20**

**श्री जिनतारण त्रिवेणी ( तीन-बत्तीसी ) :**
तारण स्वामी प्रक्रिया में

**त्रिभंगी सार ( मूल, हिन्दी, अँग्रेजी )** : तारण स्वामी **120**

**मन्थन** : मनमोहन चन्द्र **120**

## आचारशास्त्र, पूजा, सुभाषित आदि

**संस्कार-संहिता** : (पं. सनतकुमार, पं. विनोद कुमार जैन) **320**

**धर्मामृत** (अनगार) : (पं. आशाधर; ज्ञानदीपिका स्वोपज्ञ टीका सहित)
सम्पा.-अनु. : सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री **400**

**धर्मामृत** (सागार) : (पं. आशाधर; ज्ञानदीपिका स्वोपज्ञ टीका सहित)
सम्पा.-अनु. : सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री **530**

**सावयपन्नती** (श्रावकप्रज्ञप्ति) : मूल : हरिभद्र सूरि,
सम्पा.-अनु. : पं. बालचन्द्र शास्त्री **120**

**मूलाचार** (प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी), (दो भाग)
(प्राकृत मूल : आचार्य वट्टकेर, संस्कृत टीका: आचार्य वसुनन्दी)
सम्पा.-अनु : आर्यिकारत्न ज्ञानमती
पूर्वार्ध : 300 रु., उत्तरार्ध 350

**ज्ञानपीठ पूजांजलि** (जैन पूजा, व्रत, स्तोत्रपाठ आदि संग्रह)
सम्पा.-अनु. : आ. ने. उपाध्ये, फूलचन्द्र शास्त्री 300

**उपासकाध्ययन** सिद्धान्ताचार्य पं. कैलासचन्द्र शास्त्री 800

**जिनवर-अर्चना** (हिन्दी पूजा-पाठ संग्रह)
सम्पा. डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री 50

**मंगलमन्त्र णमोकार : एक अनुचिन्तन**
—डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, ज्योतिषाचार्य 220

**तिरुक्कुरळ्** (हिन्दी अनुवाद)
—अनु. : पं. गोविन्दराय जैन शास्त्री पेपरबैक 80

**ध्यानस्तव** : (संस्कृत, अंग्रेजी) : भास्करनन्दी
सम्पा.-अनु. : सुजुको ओहिरा 210

**अध्यात्म पदावली :**
सम्पा.-संक. : डॉ. राजकुमार जैन 150

**बारह भावना :** नीरज जैन पेपरबैक 35

**वसुनन्दि-श्रावकाचार** (हिन्दी-भाषानुवाद) : आचार्य वसुनन्दी
सम्पा.-अनु. : पं. हीरालाल जैन सिद्धान्तशास्त्री 400

## कोश, अलंकार-शास्त्र, व्याकरण, दर्शन

**बारस अणुवेक्खा सर्वोदय टीका सहित** (दर्शन)
आचार्य विराग सागर 490

**जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश** (पाँच भागों में ) : जिनेन्द्र वर्णी
भाग-1, 375; भाग-2, 400; भाग-3, 400; भाग-4, 375
भाग-5 (शब्दानुक्रमणिका) 280

**जैनेन्द्र महावृत्ति :** आचार्य अभयनन्दी 400

**नाममाला सभाष्य :** महाकवि धनंजय 140

**प्राकृत अनुवाद कला :** स्नेहलता जैन 160

**शृंगारार्णवचन्द्रिका** (अलंकार-संग्रह) : विजय वर्णी
सम्पा. : डॉ. वी. एम. कुलकर्णी संशोधित मूल्य 10

## पुराण, चरित एवं अन्य काव्य-ग्रन्थ

**आदिपुराण** (संस्कृत, हिन्दी) : आचार्य जिनसेन (दो भाग)
सम्पा.-अनु : डॉ. पन्नालाल जैन, साहित्याचार्य भाग एक 600 रु., भाग दो 500

**उत्तरपुराण** (संस्कृत, हिन्दी) : आचार्य गुणभद्र
सम्पा.-अनु. : डॉ. पन्नालाल जैन, साहित्याचार्य 550

**पद्मपुराण** (संस्कृत, हिन्दी) : आचार्य रविषेण, (तीन भाग)
सम्पा.-अनु. : डॉ. पन्नालाल जैन, साहित्याचार्य
भाग एक 500, भाग दो 360, भाग तीन 400

**हरिवंशपुराण** (संस्कृत, हिन्दी) : आचार्य जिनसेन
सम्पा.-अनु. : डॉ. पन्नालाल जैन, साहित्याचार्य 700

**वीरवर्धमानचरित** (संस्कृत, हिन्दी) : सकल कीर्ति
सम्पा.-अनु. : पं. हीरालाल जैन 250

**हरिवंश गाथा** (हरिवंशपुराण का हिन्दी सार) :
डॉ. अमृता भारती प्रक्रिया में

**समराइच्चकहा** (प्राकृत गद्य, संस्कृत छाया, हिन्दी अनुवाद) :
हरिभद्र सूरि
अनु. : डॉ. रमेशचन्द्र जैन, बिजनौर (दो भाग) प्रत्येक 140

**महापुराण** (अपभ्रंश, हिन्दी) : कवि पुष्पदन्त, (पाँच भागों में)
सम्पा. : डॉ. पी. एल. वैद्य, अनु. : डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन, इन्दौर
भाग एक (तीर्थंकर ऋषभदेव, पूर्वार्ध) 400
भाग दो (तीर्थंकर ऋषभदेव, उत्तरार्ध) 250
भाग तीन (तीर्थंकर अजितनाथ से मल्लिनाथ तक) 350
भाग चार (तीर्थंकर मुनिसुव्रत एवं नमि जैन रामायण) 180
भाग पाँच (तीर्थंकर नेमि, पार्श्व और वर्धमान) 320

**महादव्वसंगहो** (हिन्दी) मूलकर्ता : आचार्य नेमिचन्द सिद्धान्तिदेव
प्राकृत वृत्ति एवं हिन्दी अनुवाद : एलचार्य श्रुतसागर मुनिराज 160

**सिरिवालचरिउ** (अपभ्रंश-हिन्दी) : कवि नरसेन 250

**पासणाहचरिउ** (अपभ्रंश-हिन्दी) : महाकविबुध श्रीधर कृत
सम्पा.—अनुवाद : डॉ. राजाराम जैन 320

**पज्जुण्णचरिउ ( प्रद्युम्नचरित )** (अपभ्रंश, हिन्दी) : महाकवि सिंह
सम्पा.—अनुवाद : डॉ. विद्यावती जैन 300

**वड्ढमाणचरिउ** (वर्धमानचरित) (अपभ्रंश, हिन्दी) : विबुध श्रीधर
सम्पा.-अनु. : डॉ. राजाराम जैन संशोधित मूल्य 50

**पउमचरिउ** (पद्मचरित) (अपभ्रंश, हिन्दी) : महाकवि स्वयम्भू,
(पाँच भागों में)
सम्पा.-अनु. : डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन, इन्दौर दो 50 रु., प्रक्रिया में

**रिट्ठणेमिचरिउ** (यादवकाण्ड) (अपभ्रंश, हिन्दी) : महाकवि स्वयम्भू
सम्पा.-अनु. : डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन, इन्दौर 40

**सुदर्शनचरित** (संस्कृत) :
मुनि विद्यानन्दी; सं. डॉ. हीरालाल जैन संशोधित मूल्य 10

**श्रीपालचरित :** पं दौलतराम कासलीवाल सम्पा. डॉ. वीरसागर जैन 40

**प्रद्युम्नचरित :** (संस्कृत हिन्दी) आचार्य महासेन
सम्पा.-अनु. डॉ. रमेश चन्द्र जैन 200

## ज्योतिष

***भारतीय ज्योतिष***—*डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, ज्योतिषाचार्य* 400

**भद्रबाहुसंहिता** (संस्कृत, हिन्दी)
सम्पा.-अनु. : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, ज्योतिषाचार्य 240

**केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि :** (संस्कृत, हिन्दी)
सम्पा.-अनु. : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, ज्योतिषाचार्य 120

**करलक्खण**—सम्पा. प्रो: प्रफुल्ल कुमार मोदी पेपरबैक **20**

## जैन कला, स्थापत्य, शिलालेख

**HISTORY OF GOPACHAL** —by K.D. Bajpaye **125**

**देवगढ़ की जैन कला :** डॉ. भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु' **300**

**AMBIKA : IN JAINA ART AND LITERATURE**
—Dr. Maruti Nandan Prasad Tiwari **100**

**यशोधरचरित की सचित्र पाण्डुलिपियाँ**
—डॉ. कमला गर्ग **75**

**जैन शिलालेख संग्रह**—डॉ. हीरालाल जैन भाग एक **235**

## संगीत

**संगीत समयसार**—आचार्य पार्श्वनाथ कृत
सम्पा.-अनु. आचार्य बृहस्पति **200**

## अनुसन्धान, समीक्षा आदि

**THE SILENT EARTH (MOOKMATI) EPIC POEM**
—Acharaya Vidyasagar **350**

**STRUCTURE AND FUNCTIONS OF SOUL IN JAINISM**
—Dr. S. C. Jain **150**

**RELIGION AND CULTURE OF THE JAINS**
—Dr. Jyoti Prasad Jain **150**

**ASPECTS OF JAIN RELIGION**
—Dr. Vilas A. Sangave प्रक्रिया में

**THE SACRED SHRAVANABELAGOLA**
—Dr. Vilas A. Sangave Paperback प्रक्रिया में

**TIRUVALLUVAR AND HIS TIRUKKURAL :**
Ka. Naa. Subramanyam प्रक्रिया में

**JAIN LITERATURE IN TAMIL**
Prof. A. Chakravarti **20**

**MAHAVIRA : HIS TIMES & HIS PHILOSOPHY OF LIFE**
—Dr. Hiralal Jain, Dr. A. N. Upadhye Paperback **20**

**MY REMINISCENT SOUL** —Dr. V. K. JAIN **125**

**SAMAN-SUTTAM**—by Jinendra Varni सजिल्द प्रक्रिया में
पेपरबैक प्रक्रिया में

**IN QUEST OF THE SELF**
(The Life story of Achariya Shri Vidyasagar)
—Muni Kshamasagar **125**

**भारतीय दर्शन में आत्मा एवं परमात्मा** : वीरसागर जैन **160**

**मूकमाटी-मीमांसा** (बृहत् ग्रन्थ, तीन खंडों में) :
सं. प्रभाकर माचवे, आ.राममूर्ति त्रिपाठी प्रक्रिया में

**महावीर : युग और जीवन-दर्शन**
—डॉ. हीरालाल जैन, डॉ. आ. ने. उपाध्ये पेपरबैक **20**

**वर्ण, जाति और धर्म**—पं. फूलचन्द्र शास्त्री **150**

**अपभ्रंश भाषा साहित्य की शोध-प्रवृत्तियाँ** (संवर्धित) :
डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री **130**

**प्राकृत अनुवाद कला** : स्नेहलता जैन **160**

**सोलहकारण भावना :** महात्मा भगवानदीन **35**

**जैन दर्शन का अस्तित्ववादी चिन्तन** डॉ. प्रद्युम्न कुमार अनंग **100**

## अन्य विधाएँ

**जैन प्रतीक दर्शन** : डॉ. जया जैन **350**

**द्विसन्धानम्** : महाकवि धनंजय **400**

**प्राकृत विद्या प्रवेशिका** : आचार्य प्रज्ञा सागर (भाग-1) **110**

**प्राकृत विद्या प्रवेशिका** : आचार्य प्रज्ञा सागर (भाग-2) **120**

**भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में उत्तरप्रदेश जैन समाज का योगदान** (शोध) : डॉ. अमित जैन **300**

**जैन सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य** (उपन्यास) : मुनि प्रणम्यसागर **160**

**दिगम्बरत्व और दिगम्बर मुनि** (उपन्यास) :
बाबू कामताप्रसाद जैन **180**

**चन्दना** (उपन्यासिका) : नीरज जैन पेपरबैक **25**

**अपना घर** (कविताएँ) : मुनि क्षमासागर सजिल्द प्रक्रिया में
पेपरबैक प्रक्रिया में

**त्रयी** (कविता-संग्रह) : कन्हैयालाल सेठिया **130**

**दौलत-विलास** (भक्तिपद-संग्रह) : सम्पा. अनु. वीरसागर जैन **90**

**एक और नीलांजना** (कहानी) : वीरेन्द्र कुमार जैन **35**

**प्राचीन भारत की श्रेष्ठ कहानियाँ :**
डॉ. जगदीशचन्द्र जैन सजिल्द **85** रु., पेपरबैक **60**

**दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियाँ :** डॉ. जगदीशचन्द्र जैन
सजिल्द **120** रु., पेपरबैक **90**

**मूक माटी** (महाकाव्य) : आचार्य विद्यासागर **400**

**मूक माती** (मराठी रूपान्तर) :
आचार्य विद्यासागर; अनु. मुनि समाधिसागर **150**

**मूक माटी** (महाकाव्य गुजराती में) : आचार्य विद्यासागर **800**

**मुक्तिदूत** (उपन्यास) : वीरेन्द्र कुमार जैन सजिल्द **240** रु.,
पेपरबैक **120**

**मेघवाहन** (उपन्यास) : निर्मल कुमार प्रक्रिया में

**गोमटेश गाथा** (उपन्यास) : नीरज जैन **120**

**पट्टमहादेवी शान्तला** (ऐतिहासिक उपन्यास) :
सी. के. नागराज राव (चार भागों में)
(भाग-1,2,4) **300**, (भाग-3) प्रत्येक **350**

**अन्तर्द्वन्द्वों के पार : गोम्मटेश्वर बाहुबली** (विवेचन) :
लक्ष्मीचन्द्र जैन **45**

**भारतीय इतिहास : एक दृष्टि** (इतिहास) :
डॉ. ज्योति प्रसाद जैन **400**

**प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलाएँ :**
डॉ. ज्योति प्रसाद जैन सजिल्द प्रक्रिया में
पेपरबैक प्रक्रिया में

**जैनधर्म में विज्ञान :** सम्पा. डॉ. नारायण लाल कछारा प्रक्रिया में

**हिन्दी के महाकाव्यों में चित्रित भगवान महावीर :**
डॉ. सुषमा गुणवन्त रोटे **75**

**दक्षिण भारत में जैन धर्म :** पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री **80**

**जैन पूजा काव्य** (एक चिन्तन) डॉ. दयाचन्द साहित्याचार्य **180**

**भीतर कहीं** (कविता-संग्रह) : मुनि अजितसागर **120**

**जैनधर्म में वर्षायोग** : उपाध्याय प्रज्ञसागर मुनि **20**

**जैनधर्म में गुरुपूर्णिमा** : उपाध्याय प्रज्ञसागर मुनि **40**

❐❐